खेतड़ी ठिकाने के प्रशासन में राजा बख्तावर सिंह, श्योनाथ सिंह तथा फतेह सिंह का योगदान

डॉ0 सपना चौहान

1826 ई. में राजा अभय सिंह की 1826 ई. में मृत्यु के बाद उनके एक मात्र जीवित पुत्र बख्तावर सिंह खेतड़ी के शासक बने। जिस प्रकार बाघ सिंह ने अपने जीवन के उत्तरार्ध में शासन की बागडोर कुवंर अभय सिंह के हाथ में सौंप दी थी उसी प्रकार राजा अभय सिंह ने भी अपने जीवित रहते ही कुवंर बख्तावर सिंह को बहुत सारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दे कर शासन का अनुभव करवा दिया था।

बख्तावर सिंह की असामयिक मृत्यु ने खेतड़ी ठिकाने को बहुत हानि पहुॅचाई। जिस समय उनकी मृत्यु हुई थी उस समय उनके पुत्र श्योनाथ सिंह की उम्र मात्र तीन वर्ष की थी। प्रतिभाशाली शासकों के मजबूत रथ पर आरूढ़ होकर सुदृढ़ ठिकाने के रूप में विकास के रास्ते पर सरपट दौड़ रहे ठिकाने के सामने अचानक बहुत बड़ा अवरोध आ गया। तीन वर्षीय बालक राजा के काल में शुरू हुआ नाबालिग शासन खेतड़ी के लिये बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ।

राजा श्योनाथ सिंह की नाबालिगी में शासन चलाने के लिये एक कौंसिल का गठन किया गया था। राजा श्योनाथ के समय तो कार्य जैसे–तैसे चल निकला परन्तु उनकी मुत्यु और बालक फतेहसिंह की लम्बी समय तक चलने वाली नाबालिगी ने भटियाणी जी का सब्र का बांध छलका दिया। उन्होंने पुरोहित रामनाथ का विरोध करना शुरू कर दिया। ठिकाने के कुछ मजबूत ठाकुरों और कायस्थ दल का उसे समर्थन प्राप्त था। दूसरी और श्योनाथ सिंह की पत्नी और फतेह सिंह की माता राणावतजी पुरोहित रामनाथ के समर्थन में थी। इस प्रकार ठिकाने के दरबार में भटियाणी जी एवं राणावतजी के नेतृत्व में दो शक्तिशाली गुटों का निर्माण हो गया।